Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

आंडाल का काव्य: आकांक्षा - गीत से मुक्ति-पर्व तक की यात्रा

डॉ.मेधा

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

Abstract

तमिल वैष्णव भक्ति-परंपरा की कवयित्री आंडाल भारतीय साहित्य में स्त्री-अनुभव की एक अद्वितीय काव्यात्मक उपस्थिति हैं। उनकी दो प्रमुख रचनाएँ—तिरुप्पावै और नाचियार तिरुमोळि—भक्ति को केवल धार्मिक समर्पण के रूप में नहीं, बल्कि इच्छा, विरह, देह, स्मृति, स्वप्न और आत्म-निर्मिति की जटिल प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती हैं। तिरुप्पावै के सामूहिक स्त्री-स्वर से लेकर नाचियार तिरुमोळि के अंतरंग और देहधर्मी 'मैं' तक आंडाल का काव्य स्त्री की धार्मिक सक्रियता और अनुभवगत स्वायत्तता की अनेक परतों को उद्घाटित करता है। आंडाल की स्त्रियाँ केवल व्रत करने वाली भक्त नहीं हैं; वे जागती हैं, दूसरी स्त्रियों को जगाती हैं, ईश्वर के द्वार तक जाती हैं, प्रवेश की माँग करती हैं और अंततः अपने संबंध की शर्त स्वयं निर्धारित करती हैं। नाचियार तिरुमोळि में यह सक्रियता और अधिक निजी हो जाती है। वहाँ विरह केवल मानसिक दशा नहीं रह जाता; वह शरीर में घटित होता है—आँसू झरनों में बदलते हैं, वक्ष पर्वतों का रूप लेते हैं, चूड़ियाँ ढीली पड़ती हैं, नींद छूट जाती है और इच्छा शरीर को अपनी भाषा बना लेती है। अर्चना वेंकटेशन ने विशेष रूप से इस काव्य में स्त्री की आकांक्षा और विरह की देहधर्मी संरचना को रेखांकित किया है। यह अध्ययन आंडाल को आधुनिक अर्थों में 'स्त्रीवादी' (feminist) सिद्ध करने का प्रयत्न नहीं करता। चक्रवर्ती राम-प्रसाद की सावधानी के अनुसार पूर्व-आधुनिक पाठों में आधुनिक स्त्रीवादी संवेदना को हूबहू खोज लेना ऐतिहासिक रूप से वर्तमानवाद पुनर्पाठ (presentist reading) होगा। अधिक उपयुक्त यह देखना है कि इन पाठों में लैंगिक अनुभव (gendered experience), देहगत आत्मानुभूति (bodily subjectivity) और सृजनात्मक कर्तृत्व (creative agency) किस प्रकार काम करते हैं। इसी पद्धति से आंडाल का काव्य पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि उनकी आध्यात्मिक स्वायत्तता सामाजिक विद्रोह की घोषणात्मक भाषा में नहीं, बल्कि अपनी इच्छा को नाम देने, अपनी देह को अनुभव के स्रोत के रूप में स्वीकारने, अपने ईश्वर का स्वयं चयन करने और भक्ति-संबंध को आत्म-अभिव्यक्ति की प्रक्रिया में रूपांतरित करने से निर्मित होती है। तिरुप्पावै का 'हम' और नाचियार तिरुमोळि का 'मैं' अंततः ऐसे संबंधपरक आत्म (relational self) की रचना करते हैं जो वस्तुतः उपलब्धि की प्राप्ति से अधिक संबंध की प्राप्ति को महत्त्व देता है—"We are yours alone."

Keywords: आंडाल, तिरुप्पावै, नाचियार तिरुमोळि, स्त्री-अस्मिता, स्त्री-इच्छा, देह, विरह, सृजनात्मक कर्तृत्व, देहगत आत्मानुभूति, भक्ति-आधारित आत्मबोध, तमिल भक्ति।

प्रस्तावना

भारतीय भक्ति-परंपरा में ईश्वर और भक्त के संबंध को व्यक्त करने के लिए अनेक रूप विकसित हुए हैं—दास्य, सख्य, वात्सल्य, माधुर्य और विरह। तमिल आलवार परंपरा ने विशेष रूप से प्रेम और विरह की भाषा को धार्मिक अनुभव का माध्यम बनाया। किंतु आंडाल का काव्य इस परंपरा में एक विशिष्ट परिवर्तन उपस्थित करता है। यहाँ स्त्री केवल प्रेम की पात्र नहीं है; वह प्रेम की मुखर, सक्रिय और स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। यह अंतर आंडाल को भारतीय भक्ति-परंपरा में अत्यंत विशिष्ट बनाता है।

आंडाल की तिरुप्पावै तीस पदों की रचना है और इसका विन्यास गोकुल की युवतियों के सामूहिक व्रत, जागरण और कृष्ण-प्राप्ति की आकांक्षा के इर्द-गिर्द निर्मित है। दूसरी ओर नाचियार तिरुमोळि 143 पदों की विस्तृत रचना है, जिसमें विष्णु की खोज मुख्यतः एक विरहिणी स्त्री की आवाज़ में व्यक्त होती है। वेंकटेशन इसे विशेष रूप से स्त्री-इच्छा की जटिलता और उसकी

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

मुखर, निःसंकोच (frank) तथा संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के लिए उल्लेखनीय मानती हैं।

यहाँ एक बुनियादी प्रश्न उठता है कि क्या आंडाल की भक्ति स्त्री को केवल आत्मसमर्पण करने वाली भक्त के रूप में प्रस्तुत करती है, या समर्पण के भीतर भी ऐसा 'स्व' निर्मित करती है जो चुनता है, अनुभव करता है, प्रश्न करता है और अपनी आध्यात्मिक नियति का अर्थ स्वयं रचता है?

विद्वान राम-प्रसाद अपने Gender in a Tamil Theopoetics संबंधी अध्ययन में इस प्रश्न को एक महत्त्वपूर्ण दिशा देते हैं। वे सावधान करते हैं कि आधुनिक लैंगिक श्रेणियों (gender categories) को पूर्व-आधुनिक पाठों पर यंत्रवत् नहीं आरोपित किया जाना चाहिए। साथ ही उनका अध्ययन यह भी स्थापित करता है कि आलवार काव्य में लैंगिक स्व (gendered self), देहगत अनुभव (bodily experience) और सृजनात्मक कर्तृत्व (creative agency) के ऐसे रूप उपस्थित हैं जो आधुनिक लैंगिक विचार (gender thought) से सार्थक संवाद कर सकते हैं। इसी बिंदु से आंडाल का काव्य केवल 'भक्ति साहित्य' का विषय नहीं रह जाता; वह आत्म-निर्मिति (subject formation) का साहित्य बन जाता है।

इतिहास और आख्यान के बीच : आंडाल का काव्यात्मक व्यक्तित्व

आंडाल की जीवन-कथा श्रीवैष्णव परंपरा में अनेक भक्तिपरक आख्यानों से घिरी हुई है—विष्णुचित्त अथवा पेरियालवार द्वारा उनका पालन-पोषण, भगवान के लिए बनी माला को पहले स्वयं धारण करना और श्रीरंगनाथ से उनके दिव्य विवाह की कथा। ये आख्यान धार्मिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, किंतु इन्हें कविता के समान ऐतिहासिक प्रमाण नहीं माना जा सकता। आधुनिक अध्ययन इस बात की ओर संकेत करते हैं कि आंडाल की जीवनी का अधिकांश स्वरूप बाद की परंपराओं में निर्मित और संरक्षित हुआ है।

यही कारण है कि इस अध्ययन का केंद्र 'आंडाल का ऐतिहासिक जीवन' नहीं, बल्कि आंडाल की काव्यात्मक आवाज़ है। राम-प्रसाद इस समस्या को और अधिक सूक्ष्म बनाते हुए याद दिलाते हैं कि आलवार काव्य-समुच्चय में काव्य-वक्ता, उसकी कल्पित व्यक्तित्व-छवि (imagined persona) और ऐतिहासिक व्यक्ति के बीच पूर्ण तादात्म्य स्थापित करना संभव नहीं है। अतः यहाँ 'आंडाल' से आशय मुख्यतः उस काव्यात्मक आत्म से है जो तिरुप्पावै और नाचियार तिरुमोळि में बोलता है।

यह अंतर इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी के भीतर से स्त्री-अनुभव की वह आवाज़ सामने आती है, जो बाद की भक्तिपरक जीवन-कथाओं की अपेक्षा अधिक जटिल और कभी-कभी अधिक मानवीय दिखाई देती है।

तिरुप्पावै : स्त्री का 'हम' और धार्मिक कर्तृत्व आंडाल का पहला काव्य-निर्णय ही अर्थवान है—वे अकेली नहीं बोलतीं।

यह मार्गशीर्ष की पूर्णिमा से भरा शुभ दिन है।

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

आओ सखियो, हम स्नान के लिए चलें।
आओ, नारायण का गुणगान करें,
और इस व्रत में साथ चलें।
– आंडाल, तिरुप्पावै, पद 1.

कविता का आरंभ ही यह स्थापित करता है कि धार्मिक चेतना का निर्माण समुदाय में हो रहा है। यहाँ 'मैं' नहीं, 'हम' प्रमुख है। तिरुप्पावै की युवतियाँ किसी बाहरी धार्मिक सत्ता की प्रतीक्षा नहीं करतीं; वे स्वयं जागती हैं, स्वयं व्रत करती हैं, स्वयं एक-दूसरे को बुलाती हैं और स्वयं कृष्ण की ओर जाती हैं। वेंकटेशन भी इस रचना की संरचना को गोकुल की युवतियों के सामूहिक अनुष्ठान से जोड़ती हैं।

यह सामूहिक केवल कथानक की सुविधा नहीं है। यह स्त्री-अनुभव का सामाजिक रूप और उसकी अभिव्यक्ति है। स्त्री यहाँ एकाकी भक्त नहीं, बल्कि संबंधपरक आत्म (relational subject) है—ऐसा आत्म जिसकी आध्यात्मिक पहचान दूसरी स्त्रियों के साथ संबंध से निर्मित होती है। इस अर्थ में तिरुप्पावै में कर्तृत्व (agency) का पहला रूप व्यक्तिगत स्वायत्तता नहीं, बल्कि सामूहिक धार्मिक कर्म है।

व्रत और नैतिकता : भक्ति का आचरण में रूपांतरण

दूसरे पद में आंडाल व्रत का स्वरूप बताती हैं। वे घी और दूध का त्याग, प्रातः स्नान, अलंकरण से विरक्ति, बुरे वचन से बचना और ज़रूरतमंदों को देना—इन सबको एक ही अनुशासन का हिस्सा बनाती हैं।

हम घी नहीं खाएँगी,
दूध नहीं पिएँगी;
भोर में स्नान करेंगी।
बुरा नहीं बोलेंगी,
किसी का अहित नहीं करेंगी,
और जिसे आवश्यकता है
उसे देने में संकोच नहीं करेंगी।

आंडाल के यहाँ भक्ति भावानुभूति तक सीमित नहीं रहती। भक्ति आचरण में प्रमाणित होती है। इच्छा को अनुशासन से गुजरना है और साधना को नैतिकता से। इससे तिरुप्पावै का भक्तिपरक संसार तीन स्तरों पर निर्मित होता है—कामना, अनुशासन और करुणा। इसी लिए आंडाल की भक्ति निजी मोक्ष की आकांक्षा से आगे बढ़कर सामुदायिक नैतिकता का रूप ग्रहण करती है।

सखियों को जगाना : स्त्री से स्त्री तक ज्ञान का संचार

तिरुप्पावै के पद 6-15 में आंडाल का कथानक एक आवर्ती दृश्य बन जाता है—एक सखी दूसरी सखी को जगाती है। सोई हुई स्त्री को पुकारना धीरे-धीरे आध्यात्मिक चेतना में प्रवेश का रूपक बन जाता है। यहाँ विशेष बात यह है कि धार्मिक ज्ञान का संचार किसी पुरुष गुरु से स्त्री तक नहीं, बल्कि स्त्री से स्त्री तक हो रहा है। एक सखी दूसरी से कहती है—उठो। इस 'उठो' में केवल शारीरिक जागरण नहीं है; यह साझा धार्मिक चेतना का निमंत्रण है।

इस प्रकार तिरुप्पावै की स्त्री-सामुदायिकता को केवल साहचर्य कहना अपर्याप्त होगा। यह एक प्रकार का अनुभवजन्य समुदाय है—ऐसा समुदाय जिसमें स्त्रियाँ एक-दूसरे के अनुभव को धार्मिक अर्थ देती हैं। करेन पेचिलिस ने स्त्री भक्ति-काव्य के संदर्भ में भक्ति-आधारित आत्मपरकता (devotional subjectivity) को इसी

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

प्रकार व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों के बीच निर्मित होने वाली अधिकारपूर्ण वाणी के रूप में समझाया है।

द्वार पर खड़ी स्त्रियाँ : दूरी, सीमा और प्रवेश

पद 16 में युवतियाँ नंदगोप के भवन के सामने पहुँचती हैं–

हे हमारे स्वामी नंदगोप के भवन के द्वारपाल,
इन रत्न-जड़ित द्वारों को खोलो।
कृष्ण ने हमें व्रत का फल देने का वचन दिया है।
हम उसे जगाने आई हैं।
हमें मत रोको–
द्वार खोलो।
– तिरुप्पावै, पद 16.

यह दृश्य आंडाल के काव्य का एक अत्यंत शक्तिशाली देहरी-बिंब (threshold-image) है। द्वार के बाहर स्त्रियाँ हैं और भीतर कृष्ण। लेकिन वे द्वार पर खड़ी होकर निष्क्रिय नहीं होतीं। वे पुकारती हैं, तर्क करती हैं और प्रवेश की माँग करती हैं। आंडाल की स्त्री यहाँ सीमा को पार करने की माँग करती है, लेकिन उसे नष्ट करके नहीं–उस सीमा पर अपनी आवाज़ रखकर। इसीलिए द्वार को केवल धार्मिक स्थल का हिस्सा मानना पर्याप्त नहीं है। वह सामाजिक और आध्यात्मिक प्रवेश का रूपक बन जाता है।

कृष्ण की शय्या तक : भक्त और भगवान के बीच की दूरी का संकुचन

पद 19 में दृश्य अधिक अंतरंग हो जाता है–

दीपक जल रहे हैं; कृष्ण नप्पिन्नै के साथ सुशोभित शय्या पर सो रहे हैं।

उनका वक्ष नप्पिन्नै के वक्ष से लगा है। उन्हें जगाओ–
हम भी उनसे मिलने आई हैं।
– तिरुप्पावै, पद 19.

यहाँ ईश्वर अमूर्त नहीं है। वह शारीरिक संसार में उपस्थित है। उसका वक्ष है, उसका शयन है, उसका नप्पिन्नै के साथ प्रेमपूर्ण संबंध है। राम-प्रसाद इस पूरे आलवार धर्म-काव्यात्मक ढाँचे (theopoetic structure) में देहधर्मी दैवी संबंध (embodied divine relation) की ओर संकेत करते हैं। उनके अनुसार आलवारों का धार्मिक काव्य ईश्वर को केवल आधिभौतिक अमूर्तता (metaphysical abstraction) के रूप में नहीं, बल्कि ऐसी अनुभूत उपस्थिति के रूप में रखता है जिसमें देह, भाव और परिवेश एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। इस दृष्टि से पद 19 आगे आने वाली नाचियार तिरुमोळि के लिए काव्यात्मक आधारभूमि तैयार करता है। यदि कृष्ण की देह प्रेम की वैध भाषा है, तो आंडाल की अपनी देह भी उस प्रेम की वैध भाषा बन सकती है।

समर्पण और स्वायत्तता : एक दिखाई देने वाला विरोधाभास तिरुप्पावै के 29वें पद में एक निर्णायक परिवर्तन आता है–

हम केवल तुम्हारे चरणों की सेवा के लिए आई हैं।
हम तुम्हारे ही हैं–
इस जन्म में भी,
आने वाले हर जन्म में भी।
हमारी दूसरी सभी इच्छाओं को
तुम्हारी ओर मोड़ दो।
– तिरुप्पावै, पद 29.

यहाँ भक्ति का लक्ष्य किसी बाहरी वस्तु की प्राप्ति नहीं रह जाता। फल की कामना से आरंभ हुई यात्रा संबंधपरक

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

IR
Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

सम्बद्धता (belonging) पर समाप्त होती है। यहाँ आत्मसमर्पण को केवल आत्म-विलोपन मानना उचित नहीं होगा। इसे संबंधपरक आत्मबोध (relational selfhood) कहना अधिक प्रासंगिक और सही होगा।

'मैं कौन हूँ?' का उत्तर अब 'मैं अकेली सत्ता हूँ' नहीं, बल्कि 'मैं उसके साथ अपने संबंध में हूँ' हो जाता है। इस प्रकार आंडाल के यहाँ समर्पण और कर्तृत्व एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी और पूरक बन जाते हैं।

आधुनिक स्वायत्तता की दृष्टि से देखें तो 'मैं तुम्हारी हूँ' किसी प्रकार के आत्म-विलोपन का कथन लग सकता है। लेकिन आंडाल के काव्य में यह उल्टा काम करता है। वह पहले अपनी इच्छा पहचानती हैं, उसका नाम लेती हैं, उसकी पीड़ा सहती हैं, ईश्वर को चुनती हैं और उससे प्रश्न करती हैं। तभी वह कहती हैं– 'मैं तुम्हारी हूँ।' अर्थात् समर्पण आत्म-विलोपन के बाद नहीं, आत्म-अभिकथन के बाद आता है। यहीं आंडाल की भक्तिपरक आत्म-चेतना आधुनिक स्वामित्ववादी व्यक्तिवाद (possessive individualism) से अलग एक संबंधपरक आत्मबोध प्रस्तुत करती है।

नाचियार तिरुमोऴि : 'हम' से 'मैं' की ओर

नाचियार तिरुमोऴि में स्वर बदल जाता है। सामूहिक स्त्री-समुदाय के स्थान पर एक अत्यंत निजी आवाज़ सामने आती है। वेंकटेशन इसे 143 पदों की ऐसी रचना मानती हैं जिसमें विष्णु की खोज मुख्यतः एक प्रेम-विह्वल युवती की आवाज़ के माध्यम से की गई है; वे इसकी स्त्री-आकांक्षा की जटिलता और उसकी मुखर अभिव्यक्ति को विशेष रूप से रेखांकित करती हैं। यहाँ आंडाल की कविता अपने सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में प्रवेश करती है। अब प्रश्न यह नहीं है कि 'हम कैसे भगवान को पाएँ?' अब प्रश्न है–'मैं उसके बिना कैसे रहूँ?' यह परिवर्तन केवल कथन का परिवर्तन नहीं है; यह आत्म-चेतना का भी परिवर्तन है।

स्वप्न, विवाह और इच्छा की आत्म-रचना

नाचियार तिरुमोऴि का 'वारणम् आयिरम्' खंड आंडाल के विवाह-स्वप्न के लिए प्रसिद्ध है। हाथियों की शोभायात्रा, वर का आगमन, विवाह-मंडप और संस्कारों की श्रृंखला–इन सबके माध्यम से एक संपूर्ण विवाह-संसार निर्मित होता है।

इस स्वप्न को केवल भविष्यसूचक धार्मिक अनुभव मान लेना इसकी साहित्यिक शक्ति को कम कर देता है। स्वप्न यहाँ वह काल्पनिक अवकाश है जिसमें स्त्री अपने प्रेम और विवाह का दृश्य स्वयं रचती है। आंडाल के लिए विवाह केवल आरोपित सामाजिक नियति नहीं है। वह अपने प्रिय का चयन करती हैं और इस चयन को धार्मिक स्वरूप तथा काव्यात्मक अभिव्यक्ति देती हैं। अर्थात् आंडाल के यहाँ विवाह से इनकार नहीं है, बल्कि विवाह का पुनर्लेखन है। यहीं आंडाल का कर्तृत्व सबसे सूक्ष्म रूप में दिखाई देता है–वह उपलब्ध सांस्कृतिक प्रतीकों को त्यागती नहीं, बल्कि उन्हें अपने अनुभव के अनुसार पुनः संगठित करती हैं।

बादलों से संवाद : प्रकृति बाहर नहीं, अनुभव के भीतर

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

नाचियार तिरुमोळि का आठवाँ दशक पूरे काव्य का एक निर्णायक मोड़ है। आंडाल बादलों को संदेशवाहक बनाती हैं। वेंकटेशन इसे एक ऐसी श्रृंखला के रूप में पढ़ती हैं जिसमें अनुपस्थित विष्णु और व्याकुल स्त्री के बीच प्रकृति मध्यस्थ बनती है।

विशाल आकाश में नीले वस्त्र की तरह फैले बादलों,
क्या मेरे वेंकटेश तुम्हारे साथ आए हैं?
मेरे आँसू उड़कर
मेरे वक्षों के बीच
झरनों की तरह बहते हैं।
उसने मेरा स्त्रीत्व मिटा दिया है–
इसमें उसका कौन-सा गौरव है?
– नाचियार तिरुमोळि, 8.1.

वेंकटेशन की प्रसिद्ध व्याख्या में यह वह बिंदु है जहाँ स्त्री-देह स्वयं भू-दृश्य बन जाती है–आँसू झरने हैं और वक्ष पर्वत। आँसुओं का क्षरण स्त्रीत्व के क्षरण के समान है। आंडाल की समस्या केवल दैहिक शुचिता के खोने की नहीं, बल्कि स्व के मंद गति से क्षरण की भी है।

यहाँ देह केवल प्रतिरूपण (representation) नहीं, अनुभव है। राम-प्रसाद 'देहधर्मिता' (bodiliness) की अवधारणा से इसे और गहरा करते हैं। उनके अनुसार देहधर्मिता केवल भौतिक शरीर नहीं; वह वह समग्र देहधर्मी अवस्था है जिसमें आत्म स्वयं को परिवेश, भावना और संबंध के भीतर अनुभव करता है। आंडाल की उत्कट आकांक्षा इसी प्रकार की देहधर्मी अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

इस दृष्टि से आंडाल की देह ज्ञान का माध्यम बनती है। वह केवल यह व्यक्त नहीं करतीं कि विरह क्या है; वह अपनी देह के माध्यम से बताती हैं कि विरह को जिया कैसे जाता है।

इच्छा की अग्नि : भाव का देह में बदलना

दूसरे पद में आंडाल कहती हैं–
हे मोतियों जैसी वर्षा बरसाने वाले बादलों,
उस वेंकटेश से जाकर पूछो–
उसने मेरे लिए क्या संदेश भेजा है?
इच्छा की अग्नि मेरे शरीर में उतर आई है।
मैं रात भर जागती हूँ,
और शीतल दक्षिणी हवा भी
अब मेरे लिए यातना है।
– नाचियार तिरुमोळि, 8.2.

यहाँ भावात्मक अनुभूति (affect) कोई मनोवैज्ञानिक अवस्था मात्र नहीं है। वह परिवेश के अर्थ को बदल देती है। ठंडी हवा सामान्यतः सुखद है; लेकिन विरहिणी के लिए वह हवा कष्ट बन जाती है। अर्थात् बाहर दुनिया तटस्थ नहीं रहती–भाव उसे पुनर्संरचित करता है।

यहाँ आंडाल का अनुभव घटनात्मक (phenomenological) है: संसार जैसा है, वैसा ही नहीं, बल्कि जैसा आत्म उसे जीता है, वैसा हो उठता है।

चूड़ियाँ और नींद : शरीर पर लिखी हुई अनुपस्थिति

तीसरे पद में आंडाल अपनी चमक, चूड़ियों, विचार और नींद के चले जाने की बात करती हैं।

मेरी आभा चली गई,
मेरी चूड़ियाँ ढीली हो गईं,
मेरी सोच और मेरी नींद चली गईं।
मैं नष्ट होती जा रही हूँ।
मैं गोविंद का गुण गाती हूँ–
लेकिन कब तक यह गीत
मेरे प्राणों को थामे रखेगा?
– नाचियार तिरुमोळि, 8.3.

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

चूड़ी यहाँ मात्र अलंकार नहीं है। वह शरीर पर अंकित सामाजिक और लैंगिक अर्थों का भौतिक संकेत है। उसके ढीले पड़ने से शरीर के साथ एक सामाजिक पहचान भी संकट में आती है। इसलिए आंडाल की देह निजी देह और सामाजिक देह—दोनों है। यहीं उनका काव्य आधुनिक देहधर्मिता-अध्ययन (embodiment studies) से गहरा संवाद करता है। शरीर केवल जैविक पदार्थ नहीं; वह सामाजिक अर्थों से निर्मित जीवन्त अनुभव-क्षेत्र है।

"मेरी देह उसकी देह की आकांक्षा करती है"

चौथे पद में आंडाल कहती हैं–

हे बिजली से चमकते बादलों,
उस वेंकटेश से जाकर कहना–
जिसके सुंदर वक्ष पर श्री निवास करती हैं–
मेरी यह कोमल युवा देह
प्रतिदिन उसके दीप्तिमान शरीर की
आकांक्षा करती है।
– नाचियार तिरुमोळि, 8.4.

यहाँ आंडाल की विशिष्टता अपनी पूरी तीव्रता से सामने आती है। स्त्री को चाहा नहीं जा रहा; स्त्री चाह रही है। यह परिवर्तन मामूली नहीं है। स्त्री अब काव्य-वस्तु (poetic object) नहीं, बल्कि कामना करने वाली काव्य-विषय (desiring subject) है।

वेंकटेशन का अध्ययन इसीलिए आलवार काव्य में पुरुष-स्वर और स्त्री-स्वर के प्रश्न को गंभीरता से उठाता है। तमिल आलवार परंपरा में पुरुष कवि भी स्त्री-स्वर ग्रहण करते हैं, लेकिन आंडाल की उपस्थिति उस निर्मित स्त्री-व्यक्तित्व (invented female persona) और जीवित स्त्री-स्वर के बीच के भेद को अधिक जटिल बना देती है।

यह वह क्षण है जहाँ स्त्री की कामना स्वयं ज्ञानात्मक प्रामाणिकता (epistemic authority) प्राप्त करती है। वह जानती है कि वह क्या चाहती है, क्योंकि वह उस इच्छा को जीती है।

"उसने मुझे भीतर से खा लिया": आत्म की पारगम्यता

छठे पद में आंडाल कहती हैं कि प्रिय उनके भीतर प्रवेश कर गया, उन्हें भीतर से खा गया और उनकी समस्त कुशलता छीन ली। वेंकटेशन इसे विरह के चरम भावात्मक स्वरूप से जोड़ती हैं; राम-प्रसाद इसी पद को देहधर्मिता (bodiliness) और पर्यावरणीय घटनानुभूति (ecological phenomenology) के अपने तर्क के लिए केंद्र उदाहरण बनाते हैं।

यहाँ एक अत्यंत गहरा अस्तित्वमीमांसक स्थिति सामने आती है। आत्म बंद और स्वतंत्र इकाई नहीं है। प्रिय बाहर है, फिर भी भीतर है। अनुपस्थित है, फिर भी देह में उपस्थित है। अर्थात् आंडाल का आत्म एक पारगम्य आत्म (porous self) है–ऐसा आत्म जो संबंधों से निर्मित होता है और निरंतर पुनर्गठित होता रहता है।

यहीं भक्तिपरक आत्मपरकता (devotional subjectivity) की अवधारणा उपयोगी हो जाती है। भक्त का आत्म किसी स्वतंत्र, बंद 'मैं' की तरह नहीं रहता; वह संबंध के भीतर अर्थ ग्रहण करता है।

"एक दिन मेरे भीतर आओ" : प्रेम और अध्यात्म की सीमाहीनता सातवें पद में आंडाल की आकांक्षा अत्यंत

Received 26 June 2026; Accepted 20 July 2026. Available online: 30 July. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

अंतरंग हो जाती है। वह भगवान से अपने भीतर आने की याचना करती हैं और वक्ष पर लगे लाल चिह्न को उसके स्पर्श से मिटाने की इच्छा व्यक्त करती हैं।

हे शीतल बादलों,
मेरी यह विनती उस कमल-नेत्र प्रभु तक पहुँचा दो।
उससे कहो–
वह एक दिन के लिए मेरे भीतर आए,
मेरे वक्ष पर लगी लालिमा को
अपने स्पर्श से मिटा दे;
तब शायद मैं जीवित रह सकूँगी।
– नाचियार तिरुमोळि, 8.7.

इस पद को केवल कामुक कहना कविता की आध्यात्मिक संरचना को संकुचित करता है; और केवल रूपक मान लेना उसकी देहधर्मी शक्ति को समाप्त कर देता है। अधिक उपयुक्त है कि इसे कामुक और रहस्यात्मक अनुभव के सतत विस्तार (erotic-mystical continuum) में देखा जाए। राम-प्रसाद का देहधर्मी धर्म-काव्य (embodied theopoetics) संबंधी विवेचन इसी दिशा में उपयोगी है। आलवारों में दैवी संबंध मानवीय देहधर्मी अनुभव से होकर व्यक्त होता है; वहाँ देह और पारलौकिकता विरोधी श्रेणियाँ नहीं हैं। इसलिए आंडाल के यहाँ देह अध्यात्म का अवरोध नहीं, बल्कि अध्यात्म की भाषा है।

शिकायत : समर्पण के भीतर प्रतिप्रश्न आठवें दशक का नौवाँ पद आंडाल की आवाज़ को एक अलग सन्दर्भ देता है–

संसार कहेगा कि वह जानता था
वह इस युवती का एकमात्र आश्रय था, फिर भी उसने उसे मरने दिया।
इसमें उसका कौन-सा गौरव है?
– नाचियार तिरुमोळि, 8.9.

यहाँ भक्त ईश्वर के सामने मौन नहीं है। वह प्रश्न करती है। वह शिकायत करती है। वह भगवान को उसके अपने नैतिक स्वरूप के सामने खड़ा करती है।

इसे विद्रोह कहना आसान होगा, पर अधिक सूक्ष्म शब्द भक्तिपरक प्रतिरोध (devotional protest) है। आंडाल का ईश्वर इतना निकट है कि उससे शिकायत की जा सकती है। यहीं प्रेम और आध्यात्मिकता का एक महत्त्वपूर्ण द्वंद्व सामने आता है–समर्पण संबंध को समाप्त नहीं करता; वह संबंध को गहरा बनाता है और गहरा संबंध प्रतिप्रश्न की अनुमति देता है।

कवयित्री का अपना नाम : निजी अनुभव का सार्वजनिक रूपांतरण दशक के अंतिम पद में आंडाल स्वयं को 'कोदै' के रूप में पहचानती हैं और अपने तमिल पदों को हृदय में धारण करने वालों के लिए फलश्रुति देती हैं। यह क्षण साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। निजी विरह अब केवल निजी नहीं रहता। वह पाठ बन जाता है। पाठ अनुष्ठान बनता है। अनुष्ठान सामुदायिक स्मृति बनता है। और इस प्रकार स्त्री का निजी अनुभव सार्वजनिक भक्तिपरक संस्कृति का हिस्सा बन जाता है। यह वह प्रक्रिया है जिसे पेचिलिस की भक्ति-आधारित आत्मपरकता (devotional subjectivity) की संकल्पना विशेष रूप से समझने में मदद करती है–महिला भक्त की व्यक्तिगत अनुभूति सामुदायिक धार्मिक भाषा में रूपांतरित होकर अन्य स्त्रियों के अनुभव के लिए भी उपलब्ध हो सकती है।

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

निष्कर्ष : देह से आत्म तक, आत्म से संबंध तक आंडाल के काव्य का पुनर्पाठ यह स्पष्ट करता है कि उनकी स्त्री-अस्मिता किसी आधुनिक व्यक्तिवादी स्वतंत्रता की सरल अवधारणा पर आधारित नहीं है। उनकी स्वायत्तता का स्वरूप अधिक जटिल, संबंधपरक और आध्यात्मिक है। तिरुप्पावै में यह स्वायत्तता सामुदायिकता के भीतर निर्मित होती है और नाचियार तिरुमोळि में निजी इच्छा, देह और विरह के अत्यंत अंतरंग अनुभव में अपनी तीव्रतम अभिव्यक्ति पाती है।

तिरुप्पावै का 'हम' स्त्री के धार्मिक कर्तृत्व का सामुदायिक आधार तैयार करता है। स्त्रियाँ स्वयं जागती हैं, एक-दूसरे को जगाती हैं, व्रत का विधान तय करती हैं, नैतिक अनुशासन स्वीकारती हैं, प्रभु के द्वार पर पहुँचती हैं और प्रवेश की माँग करती हैं। यह धार्मिक सक्रियता उन्हें केवल अनुष्ठान की सहभागी नहीं, बल्कि धार्मिक अनुभव की सक्रिय निर्माता बनाती है। नाचियार तिरुमोळि में यह सामूहिक कर्तृत्व निजी आत्मानुभूति में रूपांतरित हो जाता है। वहाँ स्त्री अपने शरीर को छिपाती नहीं, बल्कि उसे आकांक्षा और विरह की भाषा बनाती है। आँसू, वक्ष, चूड़ियाँ, नींद, त्वचा, ताप और स्पर्श– ये सभी आध्यात्मिक अनुभव के माध्यम बन जाते हैं। इसीलिए आंडाल की देह को केवल 'कामना की वस्तु' के रूप में पढ़ना उनके काव्य की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को अनदेखा करना होगा। वे स्वयं कामना करने वाली सत्ता हैं।

यहीं आंडाल आधुनिक अर्थ में स्त्रीवादी होने की अपेक्षा आधुनिक स्त्री-अध्ययन के लिए अधिक जटिल और उत्पादक पाठ बन जाती हैं। उनका काव्य यह प्रश्न उठाता है कि स्त्री की स्वायत्तता क्या केवल सामाजिक स्वतंत्रता या बाहर सत्ता से मुक्ति का नाम है? या वह अपनी इच्छा को पहचानने, अपनी देह को अनुभव का वैध स्रोत मानने, अपने प्रिय का चयन करने और अपने संबंध की शर्तों पर ईश्वर से संवाद करने में भी निहित हो सकती है? लेकिन आंडाल का उत्तर दूसरा है। उनके यहाँ समर्पण आत्म-विलोपन नहीं है। 'मैं तुम्हारी हूँ' कहने के लिए पहले एक ऐसा 'मैं' आवश्यक है जो अपनी इच्छा को पहचानता हो। इसलिए आंडाल की भक्ति में आत्मसमर्पण और आत्म-अभिकथन परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे को संभव बनाने वाली प्रक्रियाएँ हैं। उनकी आध्यात्मिक स्वायत्तता इसी विरोधाभासी दिखने वाले संबंध से जन्म लेती है।

इस दृष्टि से आंडाल का संबंध आधुनिक स्वामित्ववादी व्यक्तिवाद (possessive individualism) से मूलतः भिन्न है। स्वामित्ववादी व्यक्तिवाद व्यक्ति को एक स्वतंत्र और स्वायत्त स्वामी के रूप में परिभाषित करता है, जबकि आंडाल का आत्म संबंधों के भीतर अपना अर्थ प्राप्त करता है। उनका आत्म संबंधपरक आत्म (relational self) है—न तो पूर्णतः विलीन और न ही पूर्णतः स्वतंत्र। वह प्रिय के साथ संबंध में स्वयं को पहचानता है।

आंडाल के यहाँ इच्छा भी केवल व्यक्तिगत उपभोग की इच्छा नहीं है। वह संबंध की इच्छा है। देह भी केवल जैविक शरीर नहीं है; वह अनुभव, स्मृति, सामाजिक अर्थ और आध्यात्मिक आकांक्षा का स्थल है।

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

विरह भी केवल अनुपस्थिति का दुःख नहीं; वह ऐसी देहधर्मी अनुभूति है जिसमें बाहर संसार का अर्थ तक बदल जाता है।

इसलिए आंडाल की काव्यात्मक उपलब्धि को तीन परस्पर संबद्ध स्तरों पर समझा जा सकता है–स्त्री-अस्मिता, देहधर्मी इच्छा और संबंधपरक आध्यात्मिक स्वायत्तता। तिरुप्पावै में 'हम' से आरंभ होकर नाचियार तिरुमोळि में 'मैं' तक पहुँचने वाली यात्रा अंततः 'हम' और 'मैं' दोनों को एक गहरे संबंध में पुनःस्थापित करती है।

आंडाल की सबसे बड़ी शक्ति शायद इसी में है कि वे स्त्री को भक्ति की निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं रहने देतीं। वह स्वयं पुकारती हैं, स्वयं चाहती हैं, स्वयं स्वप्न देखती हैं, स्वयं शिकायत करती हैं और स्वयं अपनी अनुभूति को काव्य में रूपांतरित करती हैं। उनकी कविता निजी इच्छा को सार्वजनिक आध्यात्मिक भाषा में बदल देती है।

इस अर्थ में आंडाल भारतीय भक्ति-साहित्य में केवल एक स्त्री कवयित्री नहीं हैं; वे स्त्री-अनुभव को आध्यात्मिक ज्ञान की वैध भूमि में परिवर्तित करने वाली महत्वपूर्ण काव्यात्मक आवाज़ हैं। उनकी देह अध्यात्म की सीमा नहीं, उसका माध्यम है; उनकी इच्छा भक्ति की बाधा नहीं, उसकी ऊर्जा है; और उनका समर्पण आत्म-विलोपन नहीं, बल्कि संबंध में आत्म की पुनःस्थापना है। यही कारण है कि आंडाल का काव्य आज भी स्त्री-अस्मिता, देह, इच्छा, आत्मबोध और आध्यात्मिक स्वायत्तता पर नए विमर्श की संभावनाएँ खोलता है।

संदर्भ सूची:

1. Archana Venkatesan, "A Woman's Kind of Love: Female Longing in the Tamil Alvar Poetry," Journal of Hindu-Christian Studies 20 (2007), Article 8, 16-17, https://doi.org/10.7825/2164-6279.1383. Venkatesan यहाँ Nācciyār Tirumoḻi के आठवें दशक में देह को landscape के रूप में प्रस्तुत किए जाने–आँसुओं को झरनों और वक्षों को पर्वतों के रूप में देखने–तथा आँसुओं द्वारा "womanhood" के क्षरण की व्याख्या करती हैं।

2. Chakravarthi Ram-Prasad, "Given, Taken, Performed: Gender in a Tamil Theopoetics," in The Bloomsbury Research Handbook of Indian Philosophy and Gender, ed. Veena R. Howard (London: Bloomsbury Academic, 2019), 125-150.

3. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 29, trans. Archana Venkatesan. Venkatesan's translation concludes with the affirmation that the devotees belong exclusively to the Lord and seek only his service.

4. Archana Venkatesan, "Andal–Nacciyar Tirumoli," Poetry Makes Worlds, University of California, Davis. Venkatesan describes the poem as consisting of fourteen sections and 143 verses and emphasizes its complexity and frank descriptions of female desire.

5. Ram-Prasad, "Given, Taken, Performed," 125-150.

6. Archana Venkatesan, The Secret Garland: Āṇṭāḷ's Tiruppāvai and Nācciyār Tirumoḻi, trans. and with introduction and commentary by Archana Venkatesan (New Delhi: Oxford University Press, 2010). The edition includes the two poems, commentary and notes, appendices, glossary, and bibliography.

7. Ram-Prasad, "Given, Taken, Performed," 125-150.

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 07, July. 2026

8. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 1, trans. Archana Venkatesan.

9. Venkatesan, "Andal–Tiruppavai." Venkatesan describes Tiruppāvai as a thirty-verse poem concerning the vow undertaken by the young cowherd women of Gokula to win Krishna.

10. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 2, trans. Archana Venkatesan.

11. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 6-15, trans. Archana Venkatesan. See the sequence of awakening songs in this section.

12. Karen Pechilis, "Revisiting the Experiential World of Women's Bhakti Poetry," Religions 14, no. 6 (2023): 788, https://doi.org/10.3390/rel14060788.

13. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 16, trans. Archana Venkatesan.

14. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 19, trans. Archana Venkatesan.

15. Ram-Prasad, "Given, Taken, Performed," 127-134.

16. Āṇṭāḷ, Tiruppāvai, 29, trans. Archana Venkatesan.

17. Venkatesan, "Andal–Nacciyar Tirumoli."

18. Āṇṭāḷ, Nācciyār Tirumoḻi, sixth decad, "Vāraṇam Āyiram," trans. Archana Venkatesan. See also Venkatesan, The Secret Garland.

19. Venkatesan, "A Woman's Kind of Love," 16-17.

Received **26 June 2026**; Accepted **20 July 2026**. Available online: **30 July**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License